ISSN: 3048-9423(Online)
Naveen International Journal of Multidisciplinary Sciences (NIJMS)
© NIJMS | Vol. 1 | Issue 4 | Feb-Mar 2025
Available online at: https://nijms.com/

भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित सामाजिक मूल्य: एक अध्ययन

ममता त्रिपाठी

सहायक कुलसचिव, डा० हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, म.प्र.

corresponding author Emai: mamtapandey300@gmail.com

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित सामाजिक मूल्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन कर उनके वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महत्व को प्रकाशित करता है। जैसा हम सभी जानते हैं कि भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम और सशक्त, समृद्ध परंपराओं में सर्वोपरि है जिसमें वेदों, उपनिषदों, पुराणों, स्मृतियों, महाकाव्यों जिसमें रामायण, महाभारत आदि के साथ सभी दर्शनशास्त्रों के द्वारा मानव जीवन को यथोचित पोषित एवं संवर्धन करती आई है। वर्णित परंपरा आध्यात्मिक अथवा दार्शनिक दृष्टिकोण के साथ साथ सामाजिक एवं मानवीय मूल्यों के संचालन हेतु अत्यंत आवश्यक हैं। आधुनिक समय में जब समाज आधुनिक भौतिकता की ओर अग्रसर है तब भारतीय सामाजिक मूल्यों की आवश्यकता एवं महत्ता अत्यधिक बढ़ी है। निष्कर्ष स्वरूप यह पाया गया कि भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित सामाजिक मूल्यों द्वारा वर्तमान पीढ़ी एवं शिक्षा प्रणाली में सार्थक रूप से प्रभावी है तथा युवा पीढ़ी के नैतिक उत्थान के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण एवं आवश्यक है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में पाया गया कि भारतीय ज्ञान परंपरा के सामाजिक मूल्यों को शिक्षा प्रणाली और संस्कृति में पुनर्स्थापित किया जाना आवश्यक है।जिसके द्वारा वर्तमान एवं भावी पीढ़ियों में नैतिक मूल्यों एवं पारंपरिक सामाजिक सांस्कृतिक मूल्यों का संवर्धन हो सके। निष्कर्ष स्वरूप प्राप्त होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित सामाजिक मूल्य वैश्विक स्तर पर नितांत आवश्यक एवं उपयोगी है। प्रस्तुत शोध अध्ययन का निष्कर्ष उल्लिखित सामाजिक मूल्यों को पुनर्स्थापित करने की आवश्यकता को इंगित करता है। शोध अध्ययन के निष्कर्ष स्वरूप प्राप्त होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित सामाजिक मूल्य का महत्व और उपयोगिताएं केवल पुरातन काल के समय तक सीमित न होकर सभी काल में मनुष्य के सभ्यता और संस्कृति के उत्थान हेतु महत्वपूर्ण है। सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्य आधुनिक काल में भी उतने ही आवश्यक एवं उपयोगी हैं। इन मूल्यों के आत्मसात के द्वारा भावी पीढ़ी और चरित्र को उन्नत और सुदृढ़ बना सकती है जिसकी आज सर्वोच्च आवश्यकता है।

बीज शब्द: *सामाजिक मूल्य, दार्शनिक, नैतिक, उन्नयन, भारतीय ज्ञान परंपरा।*

परिचय-

भारतीय ज्ञान परंपरा एक प्राचीन धरोहर है जो कि प्राचीन काल से ही अपने वर्चस्व को विस्तृत और प्रभावी रूप देता आया है। इसके अंतर्गत निहित सामाजिक मूल्य जिसमें समस्त वेद वेदांग उपनिषद् नीतिशास्त्र आदि फल फूल रही थी और वर्तमान में भी प्रभावी हैं।भारतीय सामाजिक मूल्यों की विशेषताओं में प्रमुखता से हैं – सर्व हिताय की भावनाएं ,गुरु शिष्य परंपरा, नारी सम्मान , सत्य व्रत और अहिंसा, धर्म

और संयुक्त परिवार प्रथा , प्राणियों के प्रति दया , करुणा , सेवा भाव, आदि। भारतीय ज्ञान परंपरा के सामाजिक मूल्य आधुनिक संदर्भ में एकल परिवार, नैतिक पतन, और रूढ़िवाद , जातिवाद आदि विकृतियां उत्पन्न हो रहीं हैं।तब आवश्यकता है भारतीय ज्ञान परंपरा के सामाजिक मूल्यों के पुनरुत्थान की सम्मिलित , समाहित और आत्मसात करने की । वर्तमान युग में जहां वैश्वीकरण , उपभोक्तावाद और पूंजीवाद के साथ अत्यंत तीव्रता से बदलती जीवनशैली के कारण पारंपरिक सामाजिक सांस्कृतिक मूल्य संकटापन्न हो गए हैं। और इन्हीं सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों के उन्नयन की आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध भारतीय सांस्कृतिक ग्रंथों और सामाजिक सांस्कृतिक परंपराओं के विश्लेषणों पर आधारित है। शोधकर्त्री के प्रस्तुत शोध भारतीय ज्ञान परंपरा के मूलभूत ज्ञान और सिद्धांतों को आधुनिक कालीन संदर्भ में उत्कृष्टता के साथ पुनर्स्थापित करने में सार्थक रूप से प्रभावी सिद्ध होगा। प्रस्तुत शोध अध्ययन के माध्यम से शोधकर्त्री द्वारा यह प्रयास कियागया है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्य केवल भूतकाल में ही आवश्यक नहीं थे वरन् आधुनिक युग में भी नितांत आवश्यक हैं। वैदिक काल से सह अस्तित्व, परोपकार , सौहार्द्र और वसुधैव कुटुंबकम् की भवन व्याप्त थी और आज के समय में भौतिकता, उपभोक्तावाद, व्यक्तिगत स्वार्थ , हिंसा आदि चरम पर हैं तब आवश्यकता है सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों के पुनः आगमन और व्याप्त होने के। इस शोध अध्ययन में इन्हीं सब मूल्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन कर उनके महत्व के साथ आत्मसात करने की आवश्यकता पर ध्यान आकृष्ट करने की।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व –

आधुनिक समय और सभ्यता में नैतिक और सामाजिक मूल्यों का पतन दृष्ट हो रहा है। हमारे संस्कार धूमिल होते जा रहे हैं तब आवश्यकता है भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित समस्त सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों के पुनरुत्थान की जिससे वर्तमान समाज और पीढ़ियां संस्कारवान और नैतिक हो सके। इस शोध अध्ययन से भारतीय समाज और पीढ़ियां और शिक्षाविदों और नीति निर्माता – निर्धारक गण को भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित समस्त सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों की महत्ता और महत्व दोनों का भान और ज्ञान प्रदान कर सकता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन की आवश्यकता इसलिए भी है क्योंकि सांस्कृतिक विरासत और धरोहर का संरक्षण किया जा सके। शिक्षा प्रणाली में नैतिकता का अभाव है जिसे पुनः स्थापित और समाहित किया जा सके। जिससे हमारी पीढ़ियां संस्कारवान बने। सामाजिक हिंसा , असहिष्णुता, आत्मकेंद्रित भावों का समाधान होकर अहिंसा, सहिष्णुता आदि को बढ़ाया जा सके। इसके द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा और संस्कृति को संरक्षण दिया जा सके।

शोध महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके द्वारा समाज को उनके पूर्वजों के नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों का बोध होकर विकास हो सकेगा। यह भारतीय दर्शन और सामाजिक परिप्रेक्ष्य में सेतु का कार्य करेगा। नीति और प्रशासन में मूल्यों को समाविष्ट करके उचित शासनतंत्र का निर्माता सिद्ध होगा। धर्मनिरपेक्षता और सह अस्तित्व को बढ़ावा मिलेगा। वैश्विक स्तर पर भारतीय ज्ञान परंपरा और संस्कृति और सामाजिक मूल्यों को सुदृढ़ करने के साथ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सर्वोच्च स्तर प्राप्त करने में भी सहायक सिद्ध होगा।

उद्देश्य -

भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत प्रमुख स्रोतों को समझना।

भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित स्रोतों के सामाजिक मूल्यों का विश्लेषण करना।

भारतीय ज्ञान परंपरा के सामाजिक मूल्यों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता को समझना।

भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित सामाजिक मूल्यों की भूमिका का विश्लेषण करना।

शोध परिकल्पनाएं –

भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित सामाजिक मूल्यों एवं वर्तमान पीढ़ी के नैतिक मूल्यों के मध्य सार्थक संबंध है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित सामाजिक मूल्यों का वर्तमान परिवेश में कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित सामाजिक मूल्यों का शिक्षा प्रणाली में आत्मसात से कोई विशेष सार्थक अंतर नहीं होता।

संबंधित साहित्य समीक्षा –

प्रस्तुत शोध अध्ययन से संबंधित साहित्य समीक्षा में संबंधित उपनिषद , वैदिक साहित्यों का अध्ययन किया गया जिसमें वर्णित सामाजिक मूल्यों का विश्लेषण किया गया। संबंधित विद्वानों एवं शिक्षकों विद्यार्थियों आदि से सामाजिक मूल्यों से संबंधित साक्षात्कार एवं चर्चा परिचर्चा की गई। साथ ही सभी शिक्षा नीतियों आदि का विश्लेषण एवं अवलोकन किया गया।

वैदिक साहित्यों के संदर्भ में समीक्षा – शर्मा, आर (1986). में वैदिक आइडल्स ऑफ सोशल वैल्यूज नामक शोध में बताया कि वैदिक समाज व्यक्तिगत नहीं बल्कि सामूहिक जीवन को प्राथमिकता देता **राधाकृष्णन, एस की** पुस्तक प्रिंसिपल उपनिषद में उपनिषदों की सामाजिक सोच को आत्मा, ब्रम्ह, समाज के यथार्थ रूप से जोड़ने का प्रयास किया गया है। **नायक, आर,(2002).** की पुस्तक महाभारत: अ मिरर ऑफ इंडियन सोशल वैल्यूज में भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित सामाजिक मूल्यों के संदर्भ में उचित वर्णन करती है। **आईसीएसएसआर** (2017). में यह निष्कर्ष दिया था कि विद्यालयों में भारतीय परंपरा आधारित मूल्य शिक्षा को समाहित करने से विद्यार्थियों में नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व बढ़ता है।

शोध की क्रियाविधि (कार्यप्रणाली) –

प्रस्तुत शोध अध्ययन विश्लेषणात्मक एवं गुणात्मक अनुसंधान पद्धति द्वारा किया गया, जिसका मुख्य प्रयोजन भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित सामाजिक मूल्यों की भूमिका,और वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता का अध्ययन करना था।

स्रोत – सभी प्राचीन ग्रन्थ जिसमें श्रीमद्भागवत गीता, महाभारत, रामायण, बौद्ध साहित्य एवं लोक साहित्य।

तकनीक – साहित्य समीक्षा एवं विश्लेषणात्मक – तुलनात्मक अध्ययन

डेटा संग्रह – द्वितीयक स्रोतों से जिसमें पुस्तकें , शोध पत्र, जर्नल्स और ग्रन्थ सम्मिलित हैं।

डेटा विश्लेषण –

वर्णित शोध अध्ययन में डेटा विश्लेषण के अंतर्गत मूल्यों की भूमिका को अधिकतर प्रतिभागियों ने सत्य निष्ठा , सहिष्णुता एवं करुणा को नितांत आवश्यक एवं भारतीय परंपरा की रीढ़ कहा। वर्तमान शिक्षा में भारतीय पारंपरिक सामाजिक मूल्यों का अभाव दृष्टिगोचर हो रहा है। विद्वानों एवं जन मानस द्वारा यह अनुभव किया गया कि आज के शिक्षा प्रणाली में सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को सम्मिलित करने की नितांत आवश्यकता है। आधुनिक समय में प्रयोग की जाने वाली तकनीकियों के माध्यम से भारतीय परंपरागत मूल्यों का प्रचार प्रसार करके सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ावा दिया जा सकता है।

निष्कर्ष एवं परिणाम -

प्रस्तुत शोध अध्ययन में यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित सामाजिक मूल्यों का महत्वपूर्ण भूमिका है और इसका संप्रेषण आवश्यक है। विद्यालयों में भी शिक्षा प्रणाली के माध्यम से आत्मसात करके उन्नयन आवश्यक है। शोध परिकल्पनाएं * भारतीय

ज्ञान परंपरा में निहित सामाजिक मूल्यों एवं वर्तमान पीढ़ी के नैतिक मूल्यों के मध्य सार्थक संबंध है मान्य होती है। * भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित सामाजिक मूल्यों का वर्तमान परिवेश में कोई सार्थक प्रभाव नहीं है अमान्य होती है। * भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित सामाजिक मूल्यों का शिक्षा प्रणाली में आत्मसात से कोई विशेष सार्थक अंतर नहीं होता अमान्य होती है।भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित समस्त सामाजिक मूल्य दार्शनिक दृष्टि के अतिरिक्त व्यावहारिक रूप से भी महत्वपूर्ण एवं पथप्रदर्शक हैं। ये सभी मूल्य संपूर्ण विश्व के लिए महत्वपूर्ण और प्रभावी हैं। वर्तमान युग में नैतिक पतन, असिष्णुता, अहिंसा आदि का दौर बढ़ रहा है। तब आज के इस युग के नैतिक एवं सामाजिक उत्थान के लिए वर्णित मूल्यों का उपयोग और आत्मसात करना और पुनर्स्थापित करना नितांत आवश्यक है। भारतीय शास्त्रों में सामाजिक मूल्यों की परंपरा समृद्ध है। वेदों और उपनिषदों में वर्णित वसुधैव कुटुंबकम् तथा सर्वे भवन्तु सुखिन: आदि सामाजिक मूल्यों को प्रकट करते हैं और वर्तमान में इसकी उपयोगिता नितांत आवश्यक है। रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथों में सांस्कृतिक मूल्यों , नारी सम्मान, कर्तव्य बोध आदि का गहन चित्रण प्राप्त होता है जिसकी अनुशंसाएं अनुकरणीय है। भारतीय शिक्षा प्रणाली में उल्लिखित मूल्यों को पुनः समाहित और आत्मसात करने की आवश्यकता है, जिससे भावी पीढ़ी में नैतिक और सामाजिक सांस्कृतिक मूल्यों का विकास किया जा सके। भारतीय ज्ञान परंपरा मात्र धार्मिक नहीं है वरन् उसमें सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों और जीवन मूल्यों के साथ नेतृत्व क्षमता आदि की पथ प्रदर्शक रही है। यह एक अमूल्य धरोहर है जिसे उत्तरोत्तर बढ़ाना अत्यंत आवश्यक है।

सुझाव –

प्रस्तुत शोध अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार पर सुझाव निम्नानुसार हैं – शैक्षिक प्रणाली के अंतर्गत पाठ्यक्रमों में भारतीय ज्ञान परंपरा के सामाजिक मूल्यों को सम्मिलित किया जाना चाहिए।विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों में नैतिक शिक्षा को जोड़कर सामाजिक मूल्यों को सम्मिलित किया जाना चाहिए। सामाजिक स्तर पर विभिन्न क्रियाकलापों द्वारा सामाजिक मूल्यों को संप्रेषित किया जाना चाहिए। शिक्षा एवं प्रशिक्षण में भारतीय ज्ञान परंपरा के सामाजिक मूल्यों का समावेश होना चाहिए।शिक्षा शिक्षण में भी भारतीय दर्शन एवं हमारे सभी ग्रंथों , नीति शास्त्र इत्यादि का समावेश होना चाहिए। शिक्षा प्रणाली एवं पद्धति में मूल्य संदर्भित पाठ्यक्रमों को समाविष्ट करना चाहिए, जिससे सामाजिक मूल्यों जैसे – सत्य अहिंसा, सहिष्णुता, अनुशासन, सहयोग की भावना आदि नैतिक गुणों का विकास किया जाना आवश्यक है। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भी भारतीय मूल्यों का समावेश किया जाना चाहिए जिससे उनके द्वारा विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों को विकसित किया जा सकेगा। सांस्कृतिक और सामाजिक परंपराओं का संरक्षण एवं संवर्धन किया जाना चाहिए। युवाओं के लिए समय समय पर वैल्यू एजुकेशन कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए । भारतीय ज्ञान परंपरा का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापक प्रचार प्रसार किया जाना चाहिए। भावी शोध के लिए सामाजिक मूल्यों को विभाजित करके तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है, जिसमें वेदों में निहित सामाजिक मूल्य अथवा रामायण में वर्णित सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1] अग्रवाल, आर. के. (2023). *पर्यावरण विज्ञान और पारिस्थितिकी तंत्र*. राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी.

[2] अवस्थी, आर.(2020) भारतीय परंपरा में सामाजिक विचार।

[3] बनारसीदास, एम.(2005) याज्ञवल्क्य स्मृति।

[4] भारती, ध.(2016) बौद्ध धर्म और उसका समाजशास्त्र ।

[5] बालासुब्रमण्यम, आर (2001). इंडियन एथिक्स, आईसीपीआर सीरीज।

[6] गांधी, एम के (1938). हिंद स्वराज ओर इंडियन होम रूल . अहमदाबाद: नवजीवन पब्लिशिंग हाउस.

[7] इग्नू स्टडी मटेरियल.(2020), इंडियन नॉलेज सिस्टम।

[8] कपूर, के.(2019) भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्पाठ।

[9] महाभारत काव्य. वेदव्यास, अनुमानित 400 ई. पू.।

[10] मुखर्जी. आर (1958),भारतीय संस्कृति और समाज।

[11] मिश्रा, एस, एन.(1999). भारतीय नीति शास्त्र का सामाजिक मूल्य बोध (हिन्दी में). वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन.

[12] नाइक, आर. के (2002). महाभारत: अ मिरर ऑफ इंडियन सोशल वैल्यूज. न्यू दिल्ली: आर्यन बुक्स इंटरनेशनल.

[13] राधाकृष्णन, एस (1931) दी हिन्दू व्यू ऑफ लाइफ, जॉर्ज एलेन एंड अनविन लिटीडी।

[14] राधाकृष्णन, एस.(1953). द प्रिंसिपल उपनिषद. लन्दन: जॉर्ज एलेन एंड अनविन.

[15] सेन, अ (2005) दी आर्गुमेंटेटिव इंडियन, राइटिंग्स ऑन इंडियन हिस्ट्री, कल्चर एंड आइडेंटिटी, पेंगुइन बुक्स।

[16] शर्मा, आर. के.(1986). वैदिक आइडल्स ऑफ सोशल वैल्यूज. दिल्ली: नाग पब्लिशर्स.

[17] त्रिपाठी. आर, एन (2007). भक्ति आंदोलन में सामाजिक मूल्यों की अभिव्यक्ति(हिंदी में) इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन.

[18] त्रिपाठी, आर (2010) भारतीय दर्शन में नीति और सामाजिक मूल्य, राष्ट्रीय संस्थान।

[19] तिवारी, एस, सी (2009) भारतीय संस्कृति और मूल्य, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार।

[20] यूनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन (2018). रिसर्च प्रोजेक्ट्स ऑन वैल्यू एजुकेशन इन इंडियन कॉन्टेक्ट. न्यू दिल्ली: यूजीसी पब्लिकेशंस.

[21] विवेकानंद, एस (1893), शिकागो स्पीच एवं लेख संग्रह। * राधाकृष्णन, एस (1923) . इंडियन फिलासफी, वॉल्यूम1एंड2।

Cite this Article:

ममता त्रिपाठी, "भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित सामाजिक मूल्य: एक अध्ययन", *Naveen International Journal of Multidisciplinary Sciences (NIJMS), ISSN: 3048-9423 (Online), Volume 1, Issue 4, pp. 56-60, Feb-Mar 2025.*

Journal URL: https://nijms.com/

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.